अध्याय
02

एक दल के प्रभुत्व का दौर

सीखने के प्रतिफल

- छात्र भारत में लोकतंत्र के विकास में बाधक तत्वों के बारे में जान सकेंगे।
- छात्र लोकतंत्र में एक दलीय प्रभुत्व और उसकी प्रकृति को समझ पाएंगे।

लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौती

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में लोकतंत्र को स्थापित करना सबसे बड़ी चुनौती थी। क्योंकि इस समय देश कई समस्याएं—आशंकाओं से ग्रसित था। लेकिन एक राष्ट्र के रूप में भारत ने सभी समस्याओं पर विजय प्राप्त की और एक सफल लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में अग्रसर होता रहा है।

लोकतंत्र स्थापित करने की चुनौतियां →

- राष्ट्रीय एकता की समस्या
- लोकतंत्र की सफलता को लेकर संदेह
- निरक्षरता
- निर्धनता
- समाज में वर्गीय विभाजन
- विभिन्न हितों के आपसी टकराव

© JCERT not to be republished

तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व में सभी समस्याओं के जवाब में **लोकतांत्रिक राजनीति** को अपनाया और इसे सफल बनाने की जिम्मेदारी एक संवैधानिक संस्था **चुनाव आयोग** को दी

चुनाव आयोग →

- गठन—जनवरी 1950
- पहले चुनाव आयुक्त— सुकुमार सेन
- प्रथम आम चुनाव— 1952
- तीसरा आम चुनाव— 1962

चुनाव आयोग की समस्याएं →

- भारत की विशाल आकार
- भारत के विशाल जनसंख्या
- चुनाव क्षेत्रों का सीमांकन
- मतदाता सूची का निर्माण
- मतदाताओं का निरीक्षर एवं गरीब होना
- चुनाव कर्मियों का अप्रशिक्षित होना
- चुनाव कार्यों के अनुभव का अभाव
- संचार के साधनों एवं तकनीकों का अभाव

© JCERT not to be republished

पहले आम चुनाव को लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई आशंकाएं व्यक्त की गई थी—

"इतिहास का सबसे बड़ा जुआ"

—एक हिंदुस्तानी संपादक

"पंडित जवाहरलाल नेहरू अपने जीवित रहते हैं या देख लेंगे की और पछताएंगे की भारत में सार्वभौमिक मताधिकार और असफल रहा "

—ऑर्गेनाइजर पत्रिका

“आने वाला वक्त और अब से कहीं ज्यादा जानकार दर बड़े विस्मय से लाखों अनपढ़ लोगों के मतदान की यह बेहूदा नौटंकी देखेगा”

—इंडियन सिविल सर्विस के ब्रिटिश नुमाइंदे

पहले आम चुनाव का दृश्य

पहले तीन चुनावों में कांग्रेस का प्रभुत्व

पहले आम चुनाव में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत मिला। इस पार्टी ने कुल 489 सीटों में से 364 सीटें जीती और वह भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई। चुनाव परिणाम के मुताविक **पंडित जवाहरलाल नेहरू** देश के पहले प्रधानमंत्री बने। पहले आम चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी दूसरे स्थान पर रही उसे कुल 16 सीटें हासिल हुई। लोकसभा के साथ संपन्न हुए विधानसभा चुनावों में भी कांग्रेस पार्टी को बड़ी जीत हासिल हुई।

दूसरा आम चुनाव 1957 में और **तीसरा आम चुनाव 1962** में हुआ। इन चुनावों में भी कांग्रेस पार्टी ने अपनी पुरानी स्थिति को बरकरार रखा। विधानसभा चुनाव में भी अधिकांश राज्यों में कांग्रेस की सरकार बनी। अपवाद **केरल में 1957 में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी** के नेतृत्व वाली सरकार बनी। ऐसे एकाध उदाहरण को छोड़ दे तो कहा जा सकता है कि केंद्र और राज्य सरकारों दोनों में कांग्रेस पार्टी का पूर्ण नियंत्रण था।

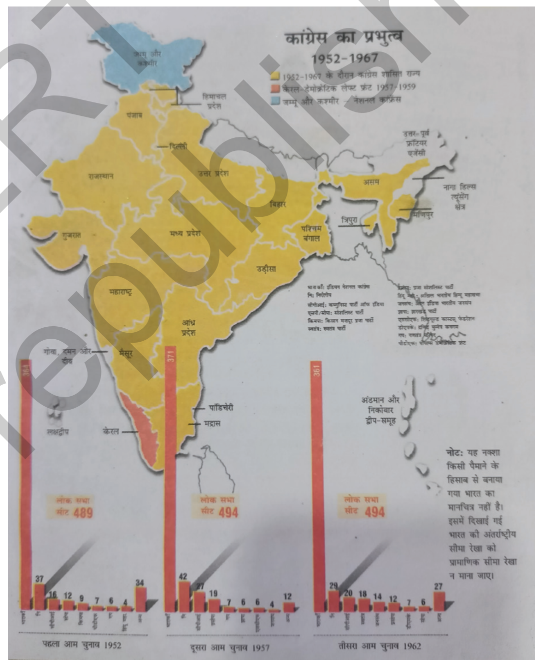

कांग्रेस पार्टी के प्रभुत्व का कारण

- स्वतंत्रता संग्राम की विरासत
- पंडित जवाहरलाल नेहरू का लोकप्रिय और करिश्माई व्यक्तित्व
- कांग्रेस का अखिल भारतीय संगठन
- भारत की विविधता का प्रतिनिधित्व
- कांग्रेस का समावेशी चरित्र

© JCERT not to be republished

✎... भारतीय दलीय व्यवस्था को कांग्रेसी व्यवस्था व्यवस्था का नाम मॉरिस जोन्स ने दिया था। भारत में चतुर्थ आम चुनाव से पहले भारत की दलीय व्यवस्था को जब समय केवल एक दल यानि कांग्रेस का प्रभुत्व था, को एक दल की प्रधानता वाली बहुदलीय व्यवस्था की संज्ञा दी थी।

लोकतंत्र मे शासन व्यवस्था को दलीय शासन का दूसरा नाम मुनरो ने कहा था।

प्रभुत्व:--"ऐसी राजनीतिक व्यवस्था जिसमें बहुत सारी पार्टियां चुनाव में भाग लेती हों,लेकिन कोई एक पार्टी हीं लम्बे समय तक चुनाव जीतती रही हो"

कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति

विश्व के कई देशों में एक पार्टी के प्रभुत्व के उदाहरण मिलते हैं। लेकिन बाकी देशों में एक पार्टी के प्रभुत्व और भारत में एक पार्टी के प्रभुत्व के बीच काफी अंतर था। कई देशों में एक पार्टी का प्रभुत्व लोकतंत्र को समाप्त करके किया गया था। जैसे चीन,क्यूबा और सीरिया के संविधान में सिर्फ एक ही पार्टी को देश में शासन करने की अनुमति दी गई है। कुछ और देशों जैसे म्यांमार, बेलारूस और इरिट्रिया में एक पार्टी का प्रभुत्व कानूनी और सैन्य उपायों के चलते कायम हुआ है। भारत में कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व लोकतांत्रिक प्रक्रिया (चुनाव) के द्वारा स्थापित हुआ था।

प्रभुत्व की प्रकृति

- **एक सामाजिक संगठन के रूप में**

अपने आरंभिक काल में कांग्रेस छोटे से वर्ग (नवशिक्षित, कामकाजी और व्यापारिक) का हित समूह भर था। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक कांग्रेस पार्टी एक इंद्रधनुषी सामाजिक संगठन के रूप में विकसित हो चुकी थी, जिसमें विभिन्न वर्गों, जातियों, धर्मों तथा भाषाओं को मानने वाले लोग सम्मिलित थे।

- **एक वैचारिक गठबंधन के रूप में**

कांग्रेस एक साथ कई विचारधाराओं को मानने वाले लोगों का संगठन था। कांग्रेस में नरमपंथी, गरमपंथी, दक्षिणपंथी और वामपंथी हर विचारधारा को मानने वाले लोग थे।

- **गुटों में तालमेल और सहनशीलता**

कांग्रेस पार्टी के अंदर कई गुट बने जो व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और प्रतिस्पर्धा की भावना से काम करती थी। कांग्रेस सभी गुटों के प्रति सहनशील बनी रही। अलग विचारधारा के बावजूद भी नेता कांग्रेस में ही बने रहे।

कांग्रेस प्रणाली

भारत के चुनावी राजनीति में (1952-67तक) जब विपक्ष केवल नाममात्र का विपक्ष था। राजनीतिक रूप से उसकी कोई हैसियत नहीं थी, तब कांग्रेस ने शासक और विपक्षी दल (कांग्रेस के अंदर बने विभिन्न गुट) दोनों की भूमिका निभाई। इसी कारण भारतीय राजनीति के इस कालखंड को **कांग्रेस प्रणाली** कहा जाता है।

विपक्षी पार्टियों का उद्धभव

भारत में बहुदलीय लोकतंत्र हैं,जिसमें कई छोटी-बड़ी पार्टियां चुनाव में भाग लेती है। लेकिन यहां कई वर्षों तक एक ही दल (कांग्रेस) का प्रभुत्व बना रहा। 1960 और 1970 के दशक से भारतीय राजनीति में विपक्षी पार्टियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाने

© JCERT not to be republished

लगी।इन पार्टियों ने अपने क्रियाकलापों से जनता को जागरुक किया और लोकतंत्र को मजबूत बनाया।विपक्षी दलों के नेताओं ने सत्ता पर अंकुश रखा और इन दलों के कारण ही कांग्रेस पार्टी के अंदर भी शक्ति संतुलन बदला जिससे कांग्रेस के प्रभुत्व को धीरे-धीरे कम होता गया।

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
2. सोशलिस्ट पार्टी
3. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया
4. स्वतंत्र पार्टी
5. भारतीय जनसंघ

कांग्रेस और विपक्षी पार्टियां

सोशलिस्ट पार्टी

गठन— 1934 ई०

संस्थापक— आचार्य नरेंद्र देव

- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन खुद कांग्रेस के भीतर हुआ था।
- इसके नेता कांग्रेस को ज्यादा प्रगतिशील और समतावादी बनाना चाहते थे। 1948 ई० में कांग्रेस पार्टी से अलग।
- अन्य नेता—जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, राम मनोहर लोहिया, एसएम जोशी इत्यादि

विचारधारा

- लोकतांत्रिक समाजवाद में विश्वास
- पूंजीपतियों और जमींदारों का विरोध

अन्य सोशलिस्ट पार्टियां

- किसान मजदूर प्रजा पार्टी
- प्रजा सोशलिस्ट पार्टी
- संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी

कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया

- 1917 की बोल्शेविक क्रांति से प्रेरित होकर भारत में भी कई साम्यवादी दल बने।
- यह समूह देश की समस्याओं का समाधान समाजवादी विचारधारा द्वारा करना चाहते थे।
- 1935 तक इन सभी समूह ने कांग्रेस के अंदर रहकर ही कार्य किया।
- दिसंबर 1941 में कांग्रेस से अलग होकर कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना की।

मुख्य नेता— ए०के० गोपालन, एस०ए०डांगे, पी०सी० जोशी, अजय घोष, पी सुंदरैया

विचारधारा

- यह पार्टी साम्यवादी विचारधारा से प्रभावित थी।
- इसके अनुसार 1947 में मिली स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता नहीं है।
- 1951 में साम्यवादी पार्टी ने हिंसक रास्ता छोड़कर चुनाव में भाग लेने का फैसला किया।
- पहले लोकसभा चुनाव में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी बनी।

© JCERT not to be republished

- 1964 ईस्वी में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी दो भागों में विभाजित गई—
  - कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया (सीपीआई)
  - कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया (मार्क्सवादी) (सीपीआईएम)

भारतीय जनसंघ

गठन—1951 ई०

संस्थापक अध्यक्ष—श्यामा प्रसाद मुखर्जी

विचारधारा

- जनसंघ ने एक **"एक देश, एक संस्कृति और एक राष्ट्र"** के विचार पर बल दिया।
- जनसंघ ने "अखंड भारत"बनाने की बात कही, जिसमें पाकिस्तान भी सम्मिलित हो।
- इन्होंने अंग्रेजी को हटाकर हिंदी को राजभाषा बनाने की मांग की।
- उन्होंने धार्मिक और सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को रियायत देने की बात का विरोध किया।
- **भारतीय जनता पार्टी** की जड़ें इसी जनसंघ में है।

प्रमुख नेता

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, बलराज मधोक

स्वतंत्र पार्टी

गठन—1959 ई०

संस्थापक—सी राजगोपालाचारी

विचारधारा

- पूंजीवाद से प्रेरित।
- सरकार का अर्थव्यवस्था में न्यूनतम हस्तक्षेप।
- केंद्रीकृत नियोजन, राष्ट्रीयकरण तथा सार्वजनिक क्षेत्र की आलोचना।
- कृषि जमीन की हदबंदी, सहकारी खेती औरखाद्यान्न के व्यापार पर सरकारी नियंत्रण का विरोध।
- जमींदारों और राजे- महाराजाओं का समर्थक।
- सोवियत संघ से मैत्री का विरोध।
- अमेरिका से संबंध बढ़ाने पर बल।

मुख्य नेता

- के० एम० मुंशी
- एनजी रंगा
- मीनू मसानी

© JCERT not to be republished

(क)	एस० ए० डांगे	(iv)	भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
(ख)	श्यामा प्रसाद मुखर्जी	(i)	भारतीय जनसंघ
(ग)	मीनू मसानी	(ii)	स्वतन्त्र पार्टी
(घ)	अशोक मेहता	(iii)	प्रजा सोशलिस्ट पार्टी

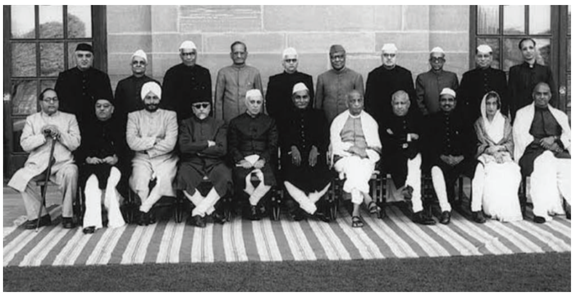

कुछ करने को — 1952 में गठित प्रथम मंत्रिमंडल के सदस्य (देखें और उनके नाम बताएं)

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-उत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प को चुनकर खाली जगह को भरें-

(क) 1952 के पहले आम चुनाव में लोकसभा के साथ-साथ...... के लिए भी चुनाव कराए गए थे। (भारत के राष्ट्रपति पद/राज्य विधानसभा/राज्यसभा/प्रधानमंत्री)

(ख) ......लोकसभा के पहले आम चुनाव में 16 सीटें जीतकर दूसरे स्थान पर रही। (प्रजा सोशालिस्ट पाटी भारतीय जनसंघ/भारतीय कम्युनिस्ट पाटी/भारतीय जनता पार्टी)

(ग) ...... स्वतंत्र पार्टी का एक निर्देशक सिद्धांत था। (कामगार तबके का हित/रियासतों का बचाव/ राज्य के नियंत्रण से मुक्त अर्थव्यवस्था/संघ के भीतर राज्यों की स्वायत्तता)

उत्तर- (क) राज्य विधानसभा

(ख) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी

(ग) राज्य के नियंत्रण से मुक्त अर्थव्यवस्था

प्रश्न 2. यहाँ दो सूचियाँ दी गई हैं। पहले में नेताओं के नाम दर्ज हैं और दूसरे में दलों के। दोनों सूचियों में मेल बैठाएँ:

(क) एस०ए० डांगे

(i) भारतीय जनसंघ

(ख) श्यामा प्रसाद मुखर्जी

(ii) स्वतंत्र पार्टी

(ग) मीनू मसानी

(iii) प्रजा सोशलिस्ट पार्टी

(घ) अशोक मेहता।

(iv) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी

उत्तर- (क) (iv), (ख) (i), (ग) (ii), (घ) (iii)

प्रश्न 3. एकल पार्टी के प्रभुत्व के बारे में यहाँ चार बयान लिखे गए हैं। प्रत्येक के आगे सही या गलत का चिह्न लगाएं:

(क) विकल्प के रूप में किसी मजबूत राजनीतिक दल का अभाव एकल पार्टी-प्रभुत्व का कारण था।

(ख) जनमत की कमजोरी के कारण एक पार्टी का प्रभुत्व कायम हुआ।

(ग) एकल पार्टी-प्रभुत्व का संबंध राष्ट्र के औपनिवेशिक अतीत से है।

(घ) एकल पार्टी-प्रभुत्व से देश में लोकतांत्रिक आदर्शों के अभाव की झलक मिलती है।

उत्तर- (क) (✓),

(ख) (×),

(ग) (✓),

(घ) (×)

© JCERT not to be republished

प्रश्न 4. अगर पहले आम चुनाव के बाद भारतीय जनसंघ अथवा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार बनी होती, तो किन मामलों में इस सरकार ने अलग नीति अपनाई होती? इन दोनों दलों द्वारा अपनाई गई नीतियों के बीच तीन अंतरों का उल्लेख करें।

उत्तर- भारतीय जनसंघ-भारतीय जनसंघ की नीतियाँ निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित होतीं-

1. इसने धर्मनिरपेक्षता की जगह 'एक देश, एक संस्कृति, एक राष्ट्र' के विचार पर ज़ोर दिया होता।

2. इसने धार्मिक व सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को रियायत देने की बात का विरोध किया होता।

3. इसने भारत और पाकिस्तान को एक करके अखंड भारत बनाने की बात कही होती।

कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इण्डिया-कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इण्डिया निम्नलिखित नीतियों में विभिन्नता रखती-

1. इस पार्टी ने आनुपातिक प्रतिनिधित्व के लिए काम किया होता।

2. इस पार्टी ने साम्यवादी सिद्धांतों का पालन किया होता।

3. आजादी के तुरंत पश्चात भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का विचार था कि 1947 में सत्ता का जो हस्तांतरण हुआ, वह सच्चीं आजादी नहीं थीं।

प्रश्न 5. कांग्रेस किन अर्थों में एक विचारधारात्मक गठबंधन थी? कांग्रेस में मौजूद विभिन्न विचारधारात्मक उपस्थितियों का उल्लेख करें।

उत्तर- कांग्रेस पार्टी एक सामाजिक व विचाराधात्मक गठबंधन बन चुकी थी, क्योंकि इसमें भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के लोग शामिल थे-

1. कांग्रेस में अंग्रेजी-दाँ, अगड़ी जाति, उच्च मध्यमवर्ग व शहरी अभिजन का वर्चस्व था।

2. कांग्रेस ने परस्पर विरोधी हितों के कई समूहों को एक-साथ रखा। कांग्रेस में किसान और उद्योगपति, शहर के बाशिंदे व गाँव के निवासी, मजदूर तथा मालिक एवं मध्य, निम्न और उच्चवर्ग व जाति सबको जगह मिला।

3. इसका नेतृत्व भी सिर्फ उच्च वर्ग तक सीमित न रहकर खेती-किसानों की बुनियाद वाले तथा गाँव-गिरान की ओर रूख रखने वालों तक भी विस्तृत हुआ।

कांग्रेस में मौजूद विभिन्न विचारधारात्मक उपस्थितियाँ—

1. स्वतन्त्रतापूर्व, बहुत-सी पार्टियाँ व संगठन अपनी विचारधाराओं एवं स्वरूप के साथ कांग्रेस में समाहित थे।

2. इसमें से कुछ पार्टियाँ कांग्रेस से अलग हो गई, जैसे-कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी जो पश्चात में विपक्षी पार्टी बन गई।

प्रश्न 6. क्या एकल पार्टी प्रभुत्व की प्रणाली का भारतीय राजनीति के लोकतांत्रिक चरित्र पर खराब असर हुआ?

उत्तर- नहीं, एकल पार्टी प्रभुत्व की प्रणाली का भारतीय राजनीति के लोकतांत्रिक चरित्र पर खराब प्रभाव नहीं हुआ, क्योंकि-

1. स्वाधीनता संघर्ष में कांग्रेस की केन्द्रीय भूमिका ने इसे प्रभाव दूसरों से ऊपर रखा।

© JCERT not to be republished

2. कांग्रेस अलग-अलग हितों के लोगों का गठबंधन था, जिसमें विभिन्न धर्मों और रिवाजों को मानने वाले लोग भी शामिल थे, जिससे लोकतंत्र को मजबूती मिलती थी।

3. स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष चुनावों के पश्चात भी, कांग्रेस बार-बार चुनावों को जीत जाया करती थी।

4. कांग्रेस पार्टी में अनेक विचारधारात्मक उपस्थितियाँ भी थीं, जिन्होंने कभी भी एक-दूसरे पर अपने को थोपने की कोशिश नहीं की या कभी कांग्रेस के बाहर भी नहीं गई।

अतएव, उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कांग्रेस ने लोकतंत्र के आदर्शों को मजबूत किया तथा देश की एकता व अखण्डता को बनाए रखा।

प्रश्न 7. समाजवादी दलों और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच के तीन अंतर बताएँ। इसी तरह भारतीय जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी के बीच के तीन अंतरों का उल्लेख करें।

उत्तर-

समाजवादी दल

1. यह दल लोकतांत्रिक समाजवाद के आदर्शों पर टिका था।

2. इस दल में पूँजीवाद की आलोचना की तथा समाजवादी राज्य की स्थापना का सहयोग किया।

3. यह पार्टी, कांग्रेस से ज़्यादा समानातावाद की अपेक्षा रखती थी।

कम्युनिस्ट पार्टी

1. यह पार्टी साम्यवाद में विश्वास रखती थी।

2. यह पार्टी प्राथमिक रूप से धर्मनिरपेक्ष, आधुनिक व अधिकारवादी थी।

3. यह पार्टी भी कांग्रेस से यही अपेक्षा रखती थी, लेकिन इसने अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हिंसा का रास्ता भी अपनाया।

भारतीय जनसंघ

1. इसने एक देश, एक संस्कृति व एक राष्ट्र के आदर्श पर बल दिया।

2. इसने भारत और पाकिस्तान को एक करके 'अखंड भारत' बनाने की बात कही।

3. इसने हमेशा भारत द्वारा आण्विक हथियार विकसित करने की वकालत की।

स्वतंत्र पार्टी

1. यह पार्टी प्राथमिक रूप से धर्मनिरपेक्ष, आधुनिक व अधिकारवादी थी।

2. इसने गुटनिरपेक्षता की नीति की आलोचना की व अमेरिका से नजदीकी संबंध बनाए रखने का सहयोग किया।

3.इस पार्टी ने केंद्रीकृत नियोजन, राष्ट्रीयकरण और सार्वजनिक क्षेत्र की मौजूदगी का विरोध की।

प्रश्न 8. भारत और मैक्सिको दोनों ही देशों में एक खास समय तक एक पार्टी का प्रभुत्व रहा। बताएँ कि मैक्सिको में स्थापित एक पार्टी का प्रभुत्व कैसे भारत के एक पार्टी के प्रभुत्व से अलग था?

उत्तर- मैक्सिको में स्थापित एक पार्टी का प्रभुत्व भारत के एक पार्टी के प्रभुत्व से अलग था। मैक्सिको में यह एक पार्टी प्रणाली थी, न कि प्रभुत्व, क्योंकि-

© JCERT not to be republished

1. भारत में कांग्रेस पार्टी ने लोकप्रिय मतगणना के आधार पर प्रभुत्व स्थापित किया, जबकि मैक्सिको में इंस्टीट्यूशनल रिवोल्यूशनरी पार्टी (पीआरआई) ने परिपूर्ण तानाशाही के आधार पर शासन स्थापित किया।

2. भारत में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हुए जहाँ चुनाव में हार भी निष्पक्ष रूप से होती थी, लेकिन जबकि मैक्सिको में चुनावों में पीआरआई हेर-फेर व धांधली करती थी।

प्रश्न 9. भारत का एक राजनीतिक नक्शा लीजिए (जिसमें राज्यों की सीमाएँ दिखाई गई हों) और उसमें निम्नलिखित को चिह्नित कीजिए:

(क) ऐसे दो राज्य, जहाँ 1952-67 के दौरान कांग्रेस सत्ता में नहीं थी।

(ख) ऐसे दो राज्य, जहाँ इस पूरी अवधि में कांग्रेस सत्ता में रही।

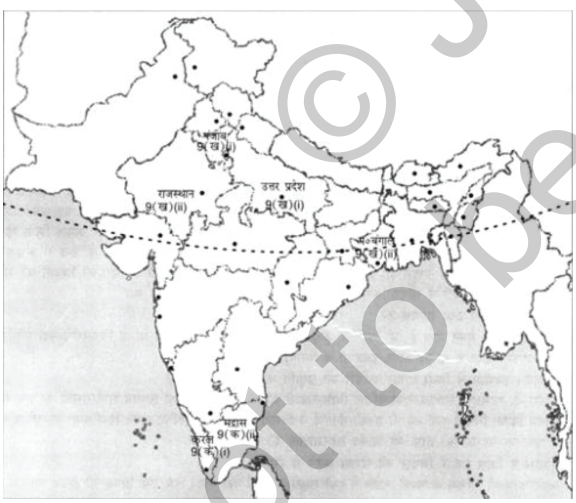

उत्तर- (क) (i) केरल (त्रावनकोर-कोचीन)

(ii) मद्रास

(ख) (i) पंजाब या उत्तर प्रदेश

(ii) राजस्थान या पश्चिमी बंगाल

प्रश्न 10. निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर इसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

कांग्रेस के संगठनकर्ता पटेल कांग्रेस को दूसरे राजनीतिक समूह से निसंग रखकर उसे एक सर्वंगसम तथा अनुशासित राजनीतिक पार्टी बनाना चाहते थे। वे चाहते थे कि कांग्रेस सबको समेटकर चलने वाला स्वभाव छोड़े और अनुशासित कॉडर से युक्त एक सगुंफित पार्टी के रूप में उभरे। 'यथार्थवादी' होने के कारण पटेल व्यापकता की जगह अनुशासन को ज्यादा तरजीह देते थे। 'आदोलन को चलाते चले जाने' के बारे में गांधी के ख्याल हद से ज़्यादा रोमानी थे, तो कांग्रेस को किसी एक विचारधारा पर चलने वाली अनुशासित तथा धुरंधर राजनीतिक पार्टी के रूप में बदलने की पटेल की धारणा भी उसी तरह कांग्रेस की उस समन्वयवादी भूमिका को पकड़ पाने में चूक गई, जिसे कांग्रेस को आने वाले दशकों में निभाना था।

-रजनी कोठारी

(क) लेखिका क्यों सोच रही है कि कांग्रेस को एक सर्वांगसम तथा अनुशासित पार्टी नहीं होना चाहिए? (ख) शुरुआती सालों में कांग्रेस द्वारा निभाई गई समन्वयवादी भूमिका के कुछ उदाहरण दीजिए।

उत्तर- (क) वह चाहती थी कि कांग्रेस सबको समेटकर चलने वाला स्वभाव छोड़े और अनुशासित कैडर से युक्त एक सगुंफित पार्टी के रूप में उभरे।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

(ख) कांग्रेस द्वारा निभाई गई समन्वयवादी भूमिका के कुछ उदाहरण निम्नलिखित प्रकार से हैं-

(i) इसने विभिन्न समूहों, हितों व राजनीतिक दलों को भी राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिए एक मंच दिया।

(ii) कांग्रेस पार्टी ने इन्द्रधनुषरूपी ऐसे सामाजिक गठबंधन को उजागर किया, जिसने भारत की विविधता का प्रतिनिधित्व किया तथा जिसमें विभिन्न जातियों, धर्मों व भाषाओं के लोग शामिल थे।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. भारत में प्रथम आम चुनाव कब हुआ?

   a. 1953 b. 1947

   c. 1950 d. 1952

2. किस राज्य में पहली गैर कांग्रेसी सरकार बनी ?

   a. बिहार b. असम

   c. केरल d. तमिलनाडु

3. चुनाव आयोग के प्रथम आयुक्त कौन थे ?

   a. सुकुमार सेन

   b. टी एन सेशन

   c. के एम मुंशी

   d. सी राजगोपालाचारी

4. एक देश एक संस्कृति और एक राष्ट्र पर किस पार्टी ने बल दिया?

   a. जनसंघ

   b. कांग्रेस

   c. सोशलिस्ट पार्टी

   d. कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ़ इंडिया

5. कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना कब हुई ?

   a. 1940 b. 1941

   c. 1942 d. 1943

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एक दलीय प्रभुत्व

2. कांग्रेसी प्रणाली

3. कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र को स्थापित करने के मार्ग में कौन-कौन सी चुनौतियां थी ?

2. भारतीय राजनीति से कांग्रेस के एक दलीय प्रभुत्व के चरित्र का अंत किन परिस्थितियों में हुआ?

© JCERT not to be republished